अध्याय 9

क्रिया

जवना शब्द से कवनों काम के कइल चाहे भइल बुझाय, ओकरे के क्रिया कहल जाला, जइसे-खाइल, पीअल, आइल, गइल, जीअल, मूअल वगैरह। क्रिया विकारी शब्द होले, ओकरा रूप में लिंग, बचन आ पुरुष के अनुसार बदलाव आवत रहेला।

भाषा के लघुत्तम इकाई वाक्य में क्रिया प्रधान होले। बल्कि क्रिया के बिना वाक्य के रचना होइये ना सके। वाक्य में संकेतित पदार्थ क्रिया के संदर्भ के बिना अपना अस्तित्व के सही पहचान ना दे पावे। क्रिये संज्ञा पदन का अर्थ के वाक्य में प्रक्षेपण करेले। संस्कृत के पद-भेद आख्यात के भोजपुरी, हिन्दी वगैरह के व्याकरण 'क्रिया' संज्ञा दिहल गइल बा।

क्रिया के मूल रूप के धातु कहल जाला जवना में प्रत्यय लगा के क्रिया के अलग-अलग रूपन के रचना होला। धातु क्रिया के प्रकृति ह। जइसे-खाइल, जागल, पढ़ल, बइठल क्रिया रूप खा, जाग, पढ़, बईठ धातु में इल, ल प्रत्यय लगा के बनल बा।

क्रिया के भेद

भोजपुरी में क्रियाभेद के पाँच गो आधार बा, प्रत्यय के आधार पर निष्पत्ति के आधार पर, कर्म के आधार पर, अर्थ के आधार पर आ संरचना के आधार पर।

प्रत्यय के आधार पर क्रिया के दूगो भेद होला- कृदन्त क्रिया आ तिङन्त क्रिया।

कृदन्त क्रिया - क्रिया के धातु रूप में कृत् प्रत्यय के योग से कृदन्त क्रिया के रचना होला, जइसे-हँसल, रोवल, पढ़ल, रखवार, देखनिहार, देखत, पढ़त, पढ़ के, उठके वगैरह। कृदन्त क्रिया दू प्रकार के पावल जालें-विकारी कृदन्त क्रिया आ अविकारी कृदन्त क्रिया।

विकारी कृदन्त क्रिया-विकारी कृदन्त क्रिया के चार गो प्रकार बा-(1) क्रियार्थक संज्ञा (2) कर्तृवाचक संज्ञा (3) अपूर्णवाचक कृदन्त आ (4) पूर्णतावाचक कृदन्त।

अविकारी कृदन्त क्रिया - अविकारी कृदन्त क्रिया के चार गो प्रकार बा- (1) पूर्वकालिक कृदन्त (2) तात्कालिक कृदन्त (3) अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त आ (4) पूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त।

विकारी कृदन्त

(1) क्रियार्थक संज्ञा- क्रिया के मूल धातु में ल, ला, व, न चाहे ए प्रत्यय के योग से भोजपुरी के क्रियार्थक संज्ञा के रचना होले, जइसे-हँसल नीमन ह, रोवल बाउर ह, पढ़ला से ग्यान होई, देखले-सुनले का होई, मनावन-दनावन लाग गइल वगैरह वाक्य में हँसल, रोवल, पढ़ला, देखले-सुनले आ मनावन-दनावन क्रियार्थक संज्ञा के रचना खातिर क्रम से ल, ला, ले, न कृत् प्रत्यय के प्रयोग कइल गइल बा।

(2) कर्तृवाचक संज्ञा-भोजपुरी में कर्तृवाचक संज्ञा के रचना खातिर धातु में बार, वाला, हार प्रत्यय के प्रयोग पावल जाला, जसे-रखवार (माँस के ढेर पर कुकुर (रखवार), देखनिहार, बनवनिहार (बनावे वाला), सुननीहार (सुनेवाला) वगैरह।

(3) अपूर्णतावाचक कृदन्त- भोजपुरी में अपूर्णवाचक कृदन्त धातु के सङ्गे अत, मते प्रत्यय जोड़ के बनेला, जइसे-निहारत (राह निहारत आँखि पथराइल), निहारते (आकाश निहारते बीतल रात), हेरत, हेरते (ढील हेरते आँखि लाग गइल) वगैरह।

(4) पूर्णतावाचक कृदन्त - भोजपुरी में पूर्णतावाचक कृदन्त धातु में 'ल' प्रत्यय लगाके बनावल जाला, जइसे-देखल लरिका, सुनल गीत, पढ़ल लरिकी, पाकल आम वगैरह।

अविकारी कृदन्त

पूर्वकालिक कृदन्त-भोजपुरी में क्रिया के पूर्वकालिका बतावे खातिर धातु में 'के' प्रत्यय के प्रयोग कइल जाला जइसे-पढ़के, जाके, खाके, नहाके, उठके वगैरह।

वाक्य प्रयोग-सीतवा पढ़ के खाई, रमुआ नहा के खाई, जटवा खाके जाई वगैरह। भोजपुरी में पूर्वकालिका कृदन्त के उपयोग क्रियाविशेषण के रूप में होला।

तिङन्त क्रिया

क्रिया में धातु रूप में तिङ् प्रत्यय लगा के तिङन्त क्रिया रूप के रचना होला। संस्कृत व्याकरण में क्रिया के तिङति रूप क साध्य आ कृदन्त के सिद्ध कहल गइल बा। 'साध्य' मतलब जवना क्रिया के सिद्ध होखे में संदेह होखे। आदेश, विधि, प्रार्थना, संभावना, प्रश्न आशीर्वाद, निमंत्रण सहित भविष्यत काल आदि के क्रिया हमेशा अनिश्चित चाहे संदिग्ध होले। मतलब एह सब में क्रिया के साध्य रूप रहेला। एह से इन्हन खातिर क्रिया के तिङन्त रूप चलेलें, अइसे त भोजपुरी कृदन्त प्रधान भाषा ह एकरा बावजूद एह भाषा में विधि, आदेश, प्रार्थना, नेवता सहित भविष्यतकाल वगैरह का क्रिया के तिङन्त रूप पढ़स, जास, रोवस, पढ़ऽ, लिखऽ, दिहीं, दीहन, जइहन, खइहन वगैरह के प्रयोग पावल जाला। बाकिर भोजपुरी के वैयाकरण लोग क्रिया के तिङन्त रूप पर विचार नइखे कइलें।

क्रिया के निष्पत्ति के आधार पर क्रिया भेद

वैयाकरण लोग क्रिया के शुरू होखे के अवस्था के साध्यावस्था आ पूरा होखे के अवस्था के सिद्धावस्था बतावत, एह दूनों अवस्था के आधार पर क्रिया के दूगो भेद बतवले बा-साध्य क्रिया आ सिद्ध क्रिया।

साध्य क्रिया- जब क्रिया के निष्पति ना भइल होला चाहे संदिग्ध होला त क्रिया साध्य होले, जइसे-राम आवस, सीता जास, रमुआ खाओ, मतेसरी जाओ, हरिआ पढ़े, गदेरना सुते। इहँवा आवस, जास, खाओ, जाओ, पढ़े, सुते क्रिया साध्य बा, सिद्ध नइखे। एह क्रियन से ई जानकारी

नइखे होत कि ई सब क्रिया होई कि ना। इहँवा क्रिया संदिग्ध बिआ। होखे, होखस, होई, होइहे वगैरह क्रिया साध्य क्रिया हवे स आ एह साध्य क्रियन के प्रयोग से सिद्धो क्रिया साध्य बन जाले, जइसे- रमुआ गइल होई, सुमन आइल होखे में गइल आ आइल में होई आ होखे लगला से क्रिया साध्य बन गइल बा। संदेह, संभावना आ भविष्यत काल क्रिया के साध्य क्रिया होले।

सिद्ध क्रिया-जवना क्रिया से क्रिया के निष्पति निश्चित रूप से उजागर होखे, ओकरा के सिद्ध क्रिया कहल गइल बा। एह क्रियन के सम्पन्न होखे में कहीं-कवनो संदेह नइखे, जइसे-रधिका ससुरा गइली, लगहर दुअरा आ गइल, किशन इस्कूल गइल बा, बाबू जी घरे अइले हँ। वर्तमान आ भूतकाल के क्रिया सब सिद्ध क्रिया होले।

कर्म के आधार पर क्रिया भेद

वाक्य में कर्त्ता आ कर्म के स्थान क्रिया के संदर्भ में बहुते महत्त्व के होला। क्रिया के फल या त कर्त्ता पर पड़ेला चाहे कर्म पर। वाक्य में कर्त्ता जरूर रहेला, बाकिर कुछ क्रिया कर्म लेवेले आ कुछ ना लेवे। एह से क्रिया द्वारा कर्म लेवे आ ना लेवे के आधार पर क्रिया के दूगो भेद होला-सकर्मक क्रिया आ अकर्मक क्रिया।

सकर्मक क्रिया-जवना क्रिया के फल कर्त्ता के अलावे कर्मों पर पड़े ओकरा के सकर्मक क्रिया कहल जाला, जइसे-गाय कुटी खा तिआ। इहाँ खाइल क्रिया के फल कर्म कुटी पर पड़ता । एह से 'खाइल' सकर्मक क्रिया ह। जब क्रिया दू कर्म के विधान करे आ ओकर फल दूनों पर पड़े

त ऊ **द्विकर्मक क्रिया** कहाले, जइसे-माई बेटा के दूध पिआवतारी। इहाँ पीये के फल बेटा आ दूध दूनों पर पड़ता।

अकर्मक क्रिया-जवना क्रिया के फल खाली कर्त्ता पर पड़ेला, जइसे- जीव घबराता, ऊ लजातिआ, राम सुतता, हवा बहता में घबराये, लजाये, सुते आ बहे के क्रिया कर्त्ता द्वारा सम्पन्न होखत बा आ ओकर फलो कर्ते पर पड़ता। इहाँ कवनो कर्म के जरूरते नइखे। एह से इहाँ क्रिया अकर्मक बा।

अर्थ के आधार पर क्रिया भेदः

अर्थ के आधार पर क्रिया के चार गो भेद बतावल गइल बा- प्रेरणार्थक क्रिया, कर्मकर्तृक क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया आ क्रियार्थक क्रिया।

प्रेरणार्थक क्रिया-जहाँ कर्त्ता क्रिया व्यापार के प्रेरणा देवेला, उहाँ क्रिया प्रेरणार्थक होले। एह क्रिया के कर्त्ता दूगों होलें। एगो मुख्य कर्त्ता जे असल में काम करेलें आ दोसरे प्रेरक चाहे प्रयोजक कर्त्ता जे प्रेरणा देलें। जइसे गुरुजी नितेश से किताब पढ़वावतारे। इहँवा मुख्य कर्त्ता नितेश हवें, बाकिर गुरु जी प्रेरक बाड़े। ऊ प्रेरणा देके नितेश से किताब पढ़वाव तारे। एह से ऊ (गुरुजी) प्रयोजक कर्त्ता बाड़े। पीटल-पिटवावल, काटल-कटवावल, लिखल-लिखवावल, चढ़ल-चढ़वावल, मिटावल-मिटवावल, साटल-सटवावल वगैरह प्रेरणार्थक क्रिया के उदाहरण बाड़ेस। एकरा खातिर मूल क्रिया अंतिम भोजपुरी 'ल' प्रत्यय हटा के प्रायः 'वावल' प्रत्यय जोड़ दीहल जाला।

कर्म कर्तृक प्रत्यय-जहँवा कर्म कर्त्ता जइसन क्रिया के साथे प्रयोग में आवेला आ वक्ता कर्त्ता के प्रयोग ना करे तब उहँवा कर्म कर्तृ

क्रिया होले, मतलब उहँवा कर्मे क्रिया के कर्त्ता बन जाला। जइसे-भात पाकता, गाछ कटाता, रोटी जरता वगैरह, वाक्य में वक्ता के कर्त्ता के उल्लेख कइल जरूरी नइखें, पाकल, काटल, जरल सकर्मक क्रिया हवेस। भात, गाछ, रोटी कर्म बाड़ेस, बाकिर इहँवा एह सब के प्रयोग कर्त्ता जइसन भइल बा। एह से इहँवा क्रिया कर्मकर्तृक कहाई।

पूर्वकालिक क्रिया-जवन क्रिया वाक्य का पूर्ण (विधेय) क्रिया के पहिले घट जाय ओकरा के पूर्वकालिक क्रिया कहल जाला, जइसे-कविता पढ़ के जाई, किसन खेल के पढ़ी, सर्वेन्द्र खाके पढ़ी, ज्ञान्ति पढ़के खइहन वगैरह। एह वाक्यन में पढ़के, खेलके, खा के पूर्वकालिक क्रिया ह। पूर्ण क्रिया जाई, पढ़ी आ खइहन के पहिलहीं एह क्रिया के व्यापार घटित हो जाता। पूर्वकालिक क्रिया खातिर धातु रूप में भोजपुरी के 'के' प्रत्यय लगावल जाला।

क्रियार्थक क्रिया-विधेय चाहे पूर्ण क्रिया जवना के अर्थ होले, ओकरे के क्रियार्थक क्रिया कहल जाला। एकरा नाँवे से ई उजागर हो जाता कि मुख्य चाहे पूर्ण क्रिया के अर्थे खातिर ई क्रिया आवेले, जइसे-विजय जी खीर खाये हमरा घरे अइहें, हम चाय पीये उपधेया जी के घरे जाएब, वाक्य में ई बात साफ बा कि हम उपधेया जी किहाँ जायेब तबे चाय पीअब, विजय हमरा घरे अइहें तबे खीर खइहें। इहँवा क्रियार्थक क्रिया मुख्य चाहे पूर्ण क्रिया के बाद घटित होई। ई क्रिया पूर्वकालिक क्रिया के उल्टा ह। पूर्वकालिक क्रिया पूर्णक्रिया के पहिले घटित हो जांले आ क्रियार्थक क्रिया पूर्ण क्रिया के बाद होला।

संयुक्त क्रिया के भेद

(i) अभ्यासबोधक-भूतकालिक कृदन्त का आगा 'कर' के प्रयोग से अभ्यासबोधक बनेला। एह से क्रिया के करे के अभ्यास मालूम होला। जइसे-ऊ गावल करेलन। तूँ हँसल करेल। हम खेलल करीले।

(ii) इच्छाबोधक-कृदन्त का आगे 'चाहल' का योग से इच्छाबोधक संयुक्त क्रिया बनेले। एह से कर्त्ता का कवनो काम करे का इच्छा के बोध होला। जइसे-हम किताब देखे के चाहत बानी। ऊ जीअल चाहतारन।

(iii) अवधारणबोधक-पूर्वकालिक कृदन्त में 'उठल, बइठल, लेल, देल' का प्रयोग से ई संयुक्त क्रिया बनेला। ए से धृष्टता, उतावलापन, औचकपन के भी बोध होला। जइसे-सभे चिहा उठल। मार बैठल। तूँ कह देल। संभे सुन लेलक। गाड़ी लड़ गइल मगर हम भागे से बाँच गइनी।

(iv) आरम्भबोधक -एह संयुक्त क्रिया के निर्माण क्रियार्थक संज्ञा का साथ 'लागल' का योग से होला। एह से क्रिया आरम्भ होखे के बोध होला। जइसे-पानी बरसे लागल। लरिका स पढ़े लागल। इहाँ क्रियार्थक संज्ञा के प्रत्यययुक्त संश्लिष्ट रूप लोकमुख से व्यवहार में बा। जइसे-बरसल-बरसे, पढ़ल-पढ़े।

(v) निरन्तरताबोधक-सकर्मक क्रिया का आगे 'जा', 'रह' का मेल से निरन्तरताबोधक संयुक्त क्रिया बनेले। जइसे-लिखत जा। कहत जाईं सुनत रह। पावत रहनी। खात रहलें।

(vi) निश्चयबोधक-क्रिया का आगा 'ले', 'दे', 'बइठ' का मेल से निश्चय-बोधक संयुक्त क्रिया बनेला। ए से मुख्य क्रिया का व्यापार का निश्चय के बोध होला। जइसे-ना मनब, त हम मार बइठब। कह लेल? कह घाल। ऊ चल पड़लन।

(vii) शक्तिबोधक-धातु के आगा 'सकल' जोड़ला से शक्तिबोध के संयुक्त क्रिया बनेले। ए से कर्त्ता का काम करे का शक्ति के बोध होला। जइसे-तूँ चल सकेल। ऊ दौड़ सकीहें। हम पढ़ सकीले। ऊ पढ़ सकेलन।

(viii) समाप्तिबोधक-धातु का आगा 'चुकल' जोड़ला से संयुक्त क्रिया बनेले। एह .से मुख्य क्रिया के समाप्ति आ पूरा हो गइला के बोध होला। जइसे-हम खा चुकनी। ऊ पढ़ चुकलन।

(ix) अनुमतिबोधक-क्रियार्थक संज्ञा का आगा 'देल' जोड़ला से ई संयुक्त क्रिया बनेले। ए से कवनो काम करे देवे के अनुमति देवे भा ना देवे के बोध होला। जइसे-उनका के जाय द । तूँ हमरा के बोले ना देल। लरिका के खेले द ।

(x) नित्यताबोधक -वर्तमानकालिक कृदन्त का आगे 'आइल, रहल, गइल' का मेल से ई संयुक्त क्रिया बनेले। एकरा से क्रिया का बन्द ना होखे का नित्यता के बोध होला। जइसे-पानी बरसत रही। लरिका पढ़त गइल। माधो बोलत आवत रहे।

(xi) अवकाशबोधक-क्रियार्थक संज्ञा का बाद 'पावल' जोड़ला से ई संयुक्त क्रिया बनेले। ए से क्रिया का निष्पन्न होखे में अवकाश के

बोध होला। जइसे-ऊ बोल ना पवलन। चोर भाग ना पावे। हम हँस ना पवनी।

(xii) आवश्यकताबोधक-क्रियार्थक संज्ञा का बाद 'चाहीं', 'पड़ल' का मेल से ई संयुक्त क्रिया बनेले। ए से काम का आवश्यकता भा विवशता के बोध होला। जइसे-उनका जाये के चाहीं। दुखिया के मदद करे के चाहीं। साँच बात कहे के पड़ल।

(xiii) योग्यताबोधक-क्रिया का आगा 'बनल' जोड़ला से ई संयुक्त क्रिया बनेले। ए से क्रिया का सम्पादन में योग्यता के बोध होला। जइसे-हमरा से उनकर दुख देखल ना गइल। उनका कुछओ कहत ना बनल। चीज अछइत का लाथ कइल बनी? ई क्रिया अधिका नकारात्मक आ प्रश्नवाचक संदर्भ में प्रयोग होला।

नामधातु-जब कवनो संज्ञा (नाम) धातु के रूप में प्रयुक्त होय त ओकरा के नामधातु कहल जाला, एह नाम धातुअन से भी सब तरह के क्रियापद बनेला। जइसे-कविता सविता के लतिया दिहली, छोटकु बड़कु से बतिआवत बाड़न। इहँवा 'लात' आ 'बात' नाम बा जवना से लतिआवल, बतिआवल नामधातु क्रिया बनल बा। विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव 'भोजपुरी व्याकरण के रूपरेखा' में बतवले बाड़न कि 'मूल क्रिया के अलावे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय से भी क्रिया बनेले, ओइसने क्रिया के नाम नामधातु कहल जाला, जइसे-

(i) संज्ञा से बनल नाम धातु - लात -लतिआवल, हाथ-हथिआवल, ठेहुना - ठेहुनिआवल, अँगुरी - अँगुरिआवल, गरदन -

गरदनिआवल, छाती- छतिआवल, बात-बतिआवल, करवट- करवटल, लाठी-लठिआवल, घाम- घमावल, पानी-पनिआइल, फेन-फेनावल, दुख-दुखावल, पाँजा-पँजिआवल, गोड़-गोड़िआवल, पीठ-पिठिआवल, केहुनी-केहुनिआवल, मुक्का-मुकिआवल, कनखी-कनखिआवल, कान-अकानल, गारी-गरिआवल, जाड़-जड़वल, भारी-भरिआवल, भेंट-भेंटाइल, नाक-नकिआवल, आगी-अगिआएल, लोर-लोराइल, लाज-लजाइल, झोंटा-झोंटिआवल आदि।

(ii) सर्वनाम से बनल नामधातु- जइसे अपन से अपनावल

(iii) विशेषण से बनल नामधातु-लाल-ललिआएल, हरिअर-हरिआराइल, मोट-मोटाइल, ठाढ़-ठढ़िआएल, भक्कू-भकुआएल, सोझ-सोझिआवल, लम्मा-लमरावल, ऊँच-ऊँचकावल, ठंढा-ठंढावल, जवान-जुआएल, सोहावन-सोहाएल, गरहू-गरहुआइल, मीठ-मिठाएल, करिया-करिआएल, पीअर-पिअराएल, दूबर-दुबराएल, गरम-गरमाएल, ढीठ- ढिठाएल, टेंढ़-टेढ़िआवल, गोल-पगलाएल, गाढ़-गढ़ाएल, तीत-तिताएल, खट्टा-खट्टाएल।

कुछ क्षेत्र में 'ए' का जगे 'ई' के प्रयोग होला-जइसे गरमाइल, पगलाइल, खट्टाइल।

(iv) अव्यय से बनल नाम धातु-नियरा-नियराइल, पाछा-पछुआइल, बाहर-बहरिआइल, हँ-सकारल, न-नकारल, आगा- अगुआइल, नजदीक- नजदिकाइल नगचि-निगचाइल, औचक- अकचकाइल।

(v) अनुकरण से बनल नामधातु-कें कें-कंकिआइल, ठक ठक-ठकठकावल, चों चों-चोंचिआइल, छप छप-छपछपावल, कटकट-

कटकटावल, फों फों-फोंफिआइल, खट खट-खटखटावल, झन झन-झनझनावल, छों छों-छोंछिआएल, में में-मेंमिआएल भा मेंमिआइल।

बोध प्रश्न

1. क्रिया के परिभाषा दीं।
2. भोजपुरी में क्रियाभेद के कव गो आधार बा।
3. प्रत्यय के आधार पर क्रिया के दू गो भेद होला।
4. संरचना के आधार पर क्रिया के कव गो भेद होला।
5. संयुक्त क्रिया के भेद बताई।